बाल दिवस की तैयारियों के बीच पंचवटी स्थित विसामो में भोजन करते बच्चे।

'चाचा' के सपनों को साकार करने का प्रयास 'विसामो'

अहमदाबाद, 13 नवम्बर

पश्चिमी अहमदाबाद के पंचवटी क्षेत्र में मनु निवास स्थित 'विसामो' उन बुद्धिशाली बच्चों के लिए प्रगति की सीढ़ी है, जो आर्थिक बदहाली के कारण अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर सकते। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के ऐसे बच्चों, जिनमें कूट-कूट कर प्रतिभा छिपी हुई है, को यहां आश्रय दिया जाता है। गुजराती शब्द विसामो का मतलब ही होता है आश्रय।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री और बच्चों से बेहद प्यास करने वाले पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती अर्थात् बाल दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को विसामो में चाचा नेहरू का जन्म दिन मनाने की तैयारियां चल रही थीं। विसामो की प्रशासक बीना देसाई ने कहा कि हमारे प्रथम प्रधानमंत्री चाचा नेहरू चाहते थे कि हर बच्चे को शिक्षा मिले और वह एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सके। विसामो का उद्देश्य नेहरू के इस सपने को साकार करना ही है। यहां 5 से 8 वर्ष के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। विसामो में हाल में कुल 30 बच्चे हैं, जिनमें 19 लड़के और 11 लड़कियां हैं। संस्था इन बच्चों का शिक्षा से लेकर सभी तरह का खर्चा उठाती है। अभी विसामो को शुरू हुए एक ही वर्ष हुआ है, इसीलिए बच्चों की संख्या कम है, लेकिन समय बीतने के बाद संस्था का विस्तार किया जाएगा। संस्था में प्रवेश के लिए अक्टूबर में आईक्यू टेस्ट होता है। यह परीक्षा विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं के जरिए करवाई जाती है। ये संस्थाएं गरीब परिवारों से मिलती हैं और उन्हें विसामो के बारे में जानकारी देती हैं। देसाई ने बताया कि गत वर्ष अक्टूबर-नवंबर में करीब 700 बच्चों का आईक्यू टेस्ट हुआ, जिनमें केवल 30 बच्चे ही उत्तीर्ण हो सके। विसामो ने इन बच्चों को महानगर के विभिन्न अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में दाखिल दिलाया। इन तीस बच्चों में अहमदाबाद के अलावा सूरत, ध्रांगध्रा आदि क्षेत्रों के भी हैं। इन बच्चों की पूरी जिम्मेदारी विसामो की ओर से उठाई जाती है। हर शनिवार को माता-पिता इनसे मिलने आते हैं। विसामो में आश्रित ये बच्चे महानगर के अग्रगण्य विद्यालयों में पढ़ते हैं। संस्था की ओर से बच्चों के लिए प्राइवेट ट्यूशन की भी व्यवस्था की गई है। बच्चों को उच्च स्तरीय शिक्षा दी जा रही है। संस्था की ओर से बारहवीं तक की शिक्षा दी जाती है। विसामो में सेवारत ज्यादातर कार्यकर्ता मानद् सेवा दे रहे हैं। स्वयं बीनाबेन देसाई भी मानद् सेवा दे रही हैं।

बाल दिवस आज

विसामो की स्थापना की प्रेरणा की बाबत पूछे जाने पर देसाई ने कहा कि विसामो कैरोलेक्स कम्पनी समूह और स्माइल फाउंडेशन का संयुक्त साहस है। कैरोलेक्स ने 26 जनवरी, 2001 को आए भूकंप के दौरान गुजरात विश्वविद्यालय मैदान में 'विसामो' नामक राहत शिविर लगाया था। इस शिविर का उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने भी दौरा किया था। कैरोलेक्स कम्पनी समूह का बोपल में दिल्ली पब्लिक स्कूल है, जिसमें देसाई के पुत्र और पुत्री अभ्यास करते हैं। इसी स्कूल के जरिए देसाई का इस कम्पनी के साथ सम्पर्क हुआ। विश्वविद्यालय मैदान पर करीब दो माह तक चले विसामो राहत शिविर को स्थाई रूप देने की योजना तैयार की गई और गत वर्ष अगस्त में इसकी स्थापना की गई। देसाई ने कहा कि वर्ष दर वर्ष विसामो में आने वाले बच्चों की संख्या बढ़ेगी। इसलिए भविष्य में विसामो को कैरोलेक्स फाउंडेशन के बोपल स्थित भूखंड पर स्थानांतरित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि एक बच्चे पर वार्षिक 45 से 50 हजार रुपए खर्च होते हैं। विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं की ओर से विसामो को आर्थिक सहायता मिलती है। देसाई ने बाल दिवस पर लोगों से अपील की कि वे आर्थिक रूप से कमजोर बुद्धिशाली बच्चों के विकास के लिए संस्था को आर्थिक सहायता देकर शिक्षित-संस्कारित भावी नागरिक के निर्माण में सहयोग करें।